अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस, 2021

विषय : हम समाधान के हिस्सा हैं

प्रतिवेदन

INTERNATIONAL BIODIVERSITY DAY
22 MAY 2021
We're part of the solution # ForNature

आयोजक

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

दिनांक 22.05.2021

निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी के साहसिक प्रयास एवं समूह समन्वयक अनुसंधान डा. योगेश्वर मिश्रा के मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस, 2021 के अवसर पर दिनांक 22.05.2021 को **हम समाधान के हिस्सा हैं** विषय पर आभासीय मंच के द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, विभिन्न विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि, विभिन्न संस्थान के प्रतिनिधि, झारखंड, बिहार, ओडिशा एवं पश्चिम बंगाल के वरिष्टतम वन अधिकारी, संस्थान के अधिकारी, कर्मचारी, शोधकर्मी एवं साई नाथ विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी (15) एवं अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी सहित लगभग 101 प्रतिभागियो ने हिस्सा लिया।सभी का स्वागत करते हुए संस्थान की वैज्ञानिक श्रीमती रुबी सुसाना कुजुर ने स्वयं एवं विकास के लिये मानव को जैव विविधता पर निर्भरता को बताते हुए आज के मुख्य वक्ता डा. कैलश चंद्र, सेवानिवृत निदेशक, भारतीय प्राणि सर्वेक्षण (Zoological Survey of India), कोलकाता, पश्चिम बंगाल के विषय में वृहद जानकारी दी। निदेशक महोदय एवं समूह समन्वयक अनुसंधान महोदय का

इस विकट परिस्थिति मे भी इस तरह के भव्य आयोजन करने के लिये आभार प्रकट किया।

संस्थान के निदेशक ने वरीय जीव विज्ञानी डा. कैलश चंद्र का स्वागत करते हुए कार्यक्रम में भाग लेने वाले तमाम प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं पारिस्थितिकी, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के लिए डा. कैलाश चंद्र के साथ किए कार्यों का वर्णन किया। निदेशक ने जलवायु परिवर्तन के कारणों की जानकारी दी एवं जैव विविधता, पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन की समस्या का जिक्र करते हुए इसके सुधार के लिये विश्व के विशेषज्ञों द्वारा बताए उपायों को इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों की जागरुकता हेतू प्रचार-प्रसार के लिए आग्रह किया। उन्होने बताया कि सभी समस्या का समाधान चाहते है लेकिन समस्या को एकदम से समाप्त करना आसान नहीं है, इसके लिए हम छोटे-छोटे प्रयास कर समस्या पर विजय प्राप्त कर सकते है। महामारी के दौर में भी ऐसे कार्यों को करने के प्रति भी हमारी यही मंशा है कि हम समस्या को कम करने के लिए एकजुट हो। विभिन्न प्रदेशों के वरिष्टतम वन अधिकारियों, विश्वविद्यालयों, अलग-अलग संस्थानों के प्रतिनिधि सहित शिक्षार्थियों की इतनी बड़ी संख्या में कार्यक्रम से जुड़ने पर हर्ष व्यक्त किया। विद्वान वक्ता, जीव विज्ञानी वैज्ञानिक डा. कैलाश चंद्र को सुनने के लिए सबों को बधाई दी तथा डा. चंद्र को विषयपरक तथा शिक्षाप्रद व्याख्यान के लिए आग्रह करने से पहले उन्होने साफ किया कि जब तक हम अपना रास्ता खुद नही बनाते, हमे विभिन्न आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। आज का विषय “हम समाधान के हिस्सा है” अनेको सतत विकास के मार्ग को प्रकाशित करेगा।

हम सभी जीवन के चक्र का हिस्सा है,

संघर्ष, द्वेष से दूर हम समाधान का हिस्सा है

डा, कैलाश चंद्र को आग्रह करते हुए सभी प्रतिभागियों को ध्यान से सुनने एवं आपसी विचार-विमर्श (interaction) के लिए प्रेरित किया।

डा. कैलाश चंद्र ने डा. नितिन कुलकर्णी, डा. योगेश्वर मिश्रा के साथ समस्त सहभागियों का अभिनंदन करते हुए जैव विविधता धरोहर, मानव संस्कृति एवं जीविकोपार्जन के विभिन्न पहलुओं और उसका एक दूसरे से सम्बंध पर विस्तार से व्याख्यान दिया। “प्रकृति में हमारा समाधान” और “हम प्रकृति सुधार के कारक है” को एक दूसरे का पूरक बताते हुए जैव-विविधता, मानव का कर्तव्य, विकास, जीविकोपार्जन, राष्ट्रीय धरोहर, संस्कृति, जीविकोपार्जन के विभिन्न आयामों को समझाया। उन्होने बताया कि जो देखा नही जाता वो खौफ व तबाही पैदा करता है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसे मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा अतिरिक्त लालची होना विनाश का कारण है। विकास को विनाश का पर्याय बनने से बचाने के लिए हम सभी तकनीकी विशेषज्ञों को एक मंच पर आना होगा। सर्वनाश की नीव पर विकास की इमारत खड़ा करने से बचना होगा। उन्होने प्रकृति में

जानवर, स्तनधारी, चिड़ियां, सरीसृत, पैथोजन, कीट आदि की भूमिका को आधार सामग्री के साथ प्रस्तुत किया। विभिन्न संस्थाओं के द्वारा प्राप्त आकड़ा एवं उनके क्रिया कलापों, वर्तमान में कीटों की स्थिति एवं मानव जीवन में महत्व. 1758 से 2020 तक flora और fauna, 66911 प्रजातियों की उपलब्धता, 10 Geographical zone, 51 व्याघ्र संरक्षित वन, 10 मेरिन आदि का उल्लेख करते हुए दोस्त और दुश्मन कीट का भी बहुत रुचिकर विश्लेषण किया। मैनग्रोव (Mangrove), पठार, मरुभूमि, द्विप-प्रायद्वीप, समुंद्री कछार, मृदा का उपजाउपन, मधु, गोंद आदि का वर्णन करते हुए गम्भीर बिमारियों के निदान में पारिस्थितिकी की महत्ता को भी समझाया। 0.2% क्षेत्र में 11% flora और fauna वाले अण्डमान निकोबार की सराहना की। देश के 500 चिड़ियाघर, 51 व्याघ्र प्रजातियों, 4 hot-spot, 32 हाथी अभ्यारण्य, शैलानियों, पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए काफी है। हमारी अदूरदर्शिता से 40% प्रजातियां विलुप्त हो चुंकी है। NBA इस पर कार्य कर रही है। उन्होने आश्चर्य व्यक्त किया कि आज के शहरी युवा पीढ़ी धान एवं गेहूं के फसल नही देखे है जबकि प्रकृति में लाखों (लगभग 2.5 से 3.0 लाख) प्रकार के खाद्य प्रजातियां है। त्यौहार, मेला, कृषि-वानिकी, गीत-संगीत, नृत्य को भी प्रकृति से जोड़ा एवं नागिन-डांस की चर्चा की। विचार से स्वतंत्र होते हुए क्षेत्रीयता के उपर राष्ट्रीयता को प्राथमिकता देनी होगी।

डा. संजय सिंह, भा.वा.अनु.शि.प., डा. नितिन कुलकर्णी, डा. योगेश्वर मिश्रा, डा. शरद तिवारी, सोनियाभ, डा. विवेक वैष्नव (मणिपुर), डा. हरि शंकर गुप्ता, सेवानिवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक, झारखंड, डा. माथुर, डा. भानुप्रताप सिंह, भा.व.से, ओडिशा, सयुक्त प्रधान मुंख्य वन संरक्षक, बिहार, रवि शंकर प्रसाद, कनाइ लाल डे आदि ने आपसी सहयोग एवं डा. चंद्रा के सहयोग से कई समस्याओं पर चर्चा की। इनके शंकाओं का आपसी एवं डा. चंद्रा के सहयोग से निदान मिला।

कार्यक्रम समापन के पूर्व डा. योगेश्वर मिश्रा ने प्रेरक (motivational) अंदाज में कहा कि पृथ्वी संचालन में पर्यावरण एवं पर्यावरण संचालन में जैव-विविधता का महत्वपूर्ण योगदान है। हम सब मिलकर पारिस्थितिकी संतुलन एवं जैव-विविधता को बनाए रखने का प्रयास करे।

भविष्य में रोने से बचना है

जैव विविधता बनाए रखना है।

डा. नितिन कुलकर्णी, डा. कैलाश चंद्र, डा. हरि शंकर गुप्ता, सेवानिवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक, झारखंड, डा. माथुर, डा. भानुप्रताप सिंह, भा.व.से, ओडिशा, सयुक्त प्रधान मुंख्य वन संरक्षक, बिहार, डा, विमलेंदु, सांई विश्वविद्यालय एवं समस्त प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की। कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन. वैद्य, श्री बी.डी. पंडित, श्री सूरज कुमार, सेवा एवं सुविधा प्रभाग के डा. शम्भुनाथ मिश्रा, श्री निसार आलम, श्री बसंत कुमार का सराहनीय योगदान रहा।

कार्यक्रम की झलकियां

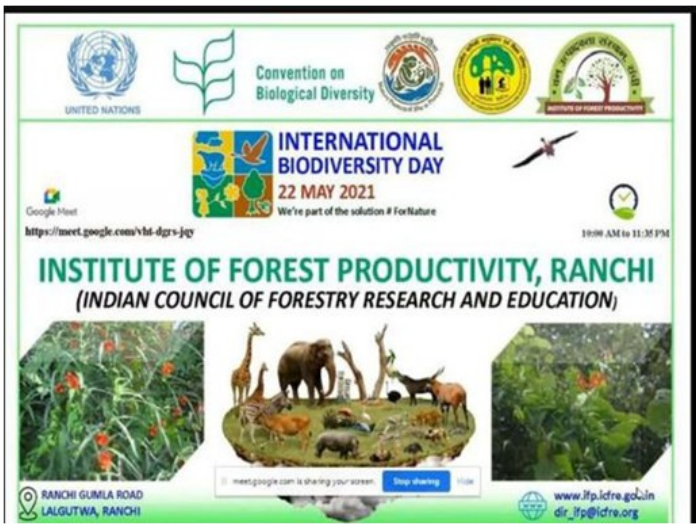

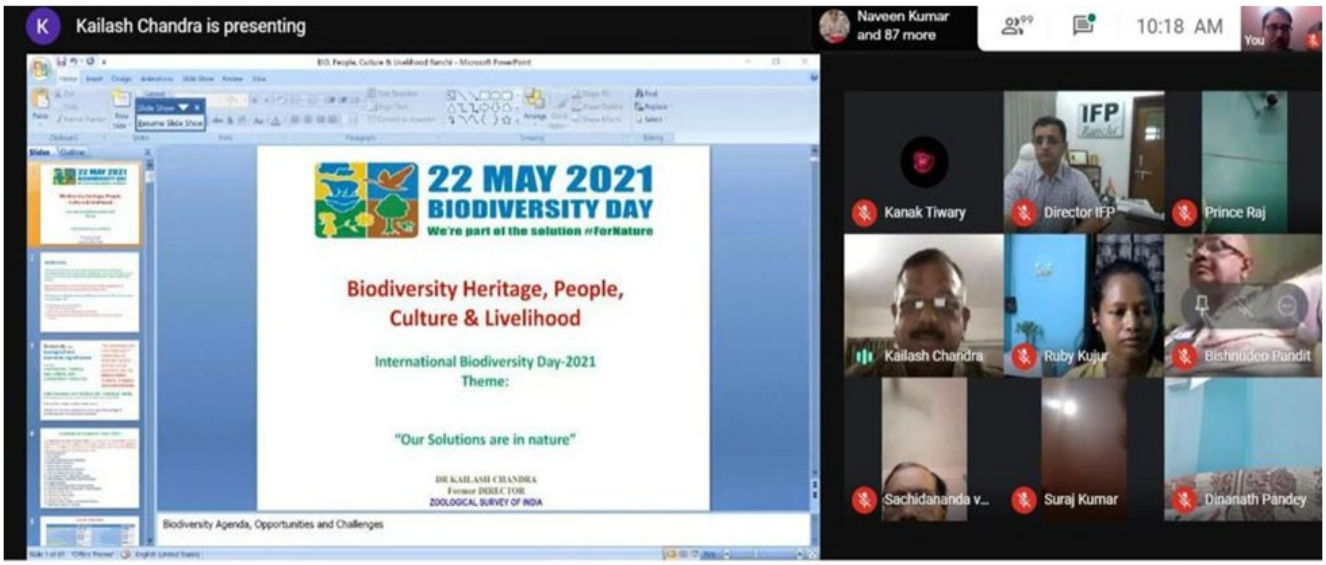

कार्यक्रम की झलकियां